भारतीय मिथक, परम्परा, इतिहास और आदिवासी

नन्हकू प्रसाद यादव,
शोधार्थी,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ0प्र0)

डॉ0वीरेन्द्र सिंह यादव,
अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

आदिवासी इस देश के मूल निवासी हैं। आदिवासी समाज ने संस्कृति, धर्म, समाज,प्रकृति एवं भौतिक जीवन की एक मूल्यवान व मानवतावादी परम्परा विकसित की। बाहर से आये आर्य आक्रान्ताओं ने आदिवासियों को सुविधाजनक परिस्थितियों से वंचित कर दिया। पराजित लोगों को पड़ कर दास–शूद्र बनाकर उन्हें समाज के हाशिए पर डाल दिया। जिन आदिम समूहों को खदेड़ दिया गया वे दूर–दराज के दुर्गम पहाड़ों, जगलों में शरण लेने को बाध्य हुए। आर्यों ने आदिवासी को असुर, दैत्य, दानव, राक्षस व प्रेत न जाने क्या–क्या संज्ञाएं देकर मनुष्य जाति से वंचित रखा। आर्यो ने इतिहास एवं प्राचीन ग्रन्थों में उन्हें विकृत करके प्रस्तुत किया। पौराणिक ग्रन्थों एवं इतिहास में आदिवासियो की विकृत स्थिति को उस समाज ने मिथकों में परिवर्तित कर दिया। आदिवासी मिथकों एवं परपराओं की पुनः व्याख्या करके उन्हें इतिहास में सम्मानित स्थान दिलाना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

Key words : *आदिवासी समाज, मिथक, परम्परा, इतिहास*

आदिवासी इस धरती के मूल निवासी थे, उन्होंने प्रकृति एवं अन्य मानवेतर प्राणियों से जुड़कर एक व्यवस्था स्थापित की। यह व्यवस्था मानवतावादी मूल्यों की पोषक थी। आदिवासियों की मानवतावादी व्यवस्था ने संस्कृति, धर्म, प्रकृति के अस्तित्व, समाज एवं भौतिक परिवेश को समृद्ध करने की एक मूल्यवान परम्परा विकसित की। किसी भी समाज की परम्परा उसकी समाजिक विरासत से अधिक उपयोगी एवं मूल्यवान होती है। परम्परा की प्रवृत्ति मौखिक होती है, जिसमे उस समाज की संस्कृति, रीति–रिवाज, प्रथा एवं पौराणिक गाथाओं को संरक्षित किया जाता है। परम्परा की उपयोगिता के विषय में ड्रेवर का मत है कि'' परम्परा कानून, प्रथा, और पौराणिक गाथाओं का वह संग्रह है जो मौखिक रूप से एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित किया जाता है। ''[1]

आदिवासी समाज आदिम काल से ही शिक्षा से वंचित रहा, जिसके कारण उनकी परम्परा में हजारों वर्षों का अनुभव जन्य ज्ञान संरक्षित है, जिसे उन्होंने लोकगीत, लोककथा, एवं लिजिंद्रियों के रूप में अभिव्यक्त किया है। आदिवासी परम्परा में सृष्टि, पृथ्वी और मनुष्य के साथ–साथ प्रकृति के विभिन्न रूपों को विषयवस्तु बनाया गया है। आदिवासी दर्शन एवं इतिहास को समझने के लिए आदिम समाज में उपस्थिति मिथक परम्पराओं को जानना आवश्यक है। भारतीय इतिहास में आदिवासियों को उनके यथार्थ रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया। उन्हें विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया। आदिवासी

मिथक उनके स्वाभाविक रूप को प्रस्तुत करने में कारगर हैं। आदिवासी मिथकों के विषय में टेलर का मत है कि ''मिथक कविता मे अभिव्यक्ति, आदिम इतिहास और एथनॉलोजी है। एक कवि उस स्वाभाविक दुनिया को वैज्ञानिक मनुष्य की दृष्टि से परखता है तो मिथ सृजक अपने इस आविष्कार को दूसरे ढंग से कहता है। एक आदिम कवि अपनी प्रेरणा के रूप में मनुष्य एवं प्रकृति के बीच अनन्त, सीमाहीन, सभ्यताओं से गढता है, जो उसकी कविता की आत्मा है।'' [2]

विश्व की सभी भाषाओं में लोककथाओं एवं मिथकों की परम्परा रही है। आदिवासी अपने मिथक एवं लोककथाओं के अस्तित्व की कल्पना अपनी समृद्ध संस्कृत के अनुरूप करते हैं, और उसकी व्याख्या तत्कालीन समझ के आधार पर। आदिवासी जीवन क्रम मे जो भी गठित होता है, या जिसे वह घठित होते देखता है, या घठित घटना सुनता है या उसे महसूस करता है इन सभी घटनाओं को वह मौखिक मिथक परम्पराओं में दर्ज करता है। घटित घटनाओं की व्याख्या भी मिथकों के माध्यम से की जाती है। मिथक एवं लोककथाओं की विशेषताओं के विषय में रमणिका गुप्ता लिखती हैं कि ''इन कथाओं की सबसे बड़ी खूबी है, कल्पना की ऊँची उड़ान के साथ–साथ धरती के भीतर तक पहुँच, अपनी जड़ों को छू जाना। उनकी कल्पना एक तार्किक रूप ले लेती है और यथार्थ की ठोस जमीन उन्हें चमत्कार से बचाती है। ''[3]

विश्व भर में मनुष्य अपने–अपने तरीके से अपनी जिज्ञासा को अपनी कल्पना, अनुभव एवं सपनों को अनेक विधाओंमें अभिव्यक्त करता रहा है। आदिवासियों में अनुभव जन्य गहरी काव्यात्मक, कल्पनाशीलता होती है। मानव जीवन की यही जिज्ञासाएं, कल्पनाएं, अपेक्षाए लोककथाओं का रूप ले लेते है। प्रायः मानव सृष्टि एवं मनुष्य के उद्‌गम और प्रकृति का भेद जानने के लिए उत्कंठित रहता है, उसकी यही कोशिश जिज्ञासा विभिन्न प्रकार के मिथको का रूप ले लेती है। मिथक, लोककथाओं के प्रति समाज का सम्माननीय भाव जुड़ जाता है। हालांकि मिथक इतर की व्याख्या करता है, इसलिए वह लोकोत्तर हो जाता है।

आदिवासियों के यहाँ कोई धार्मिक ग्रंथ या शास्त्र नहीं होते, अपितु मिथक सदियो से एक विरासत के रूप में सभी अनुष्ठानों में पर्व एवं त्योहारों के अवसर पर दोहराये जाते हैं। आदिवासी की विरासत मे मंदिर या भवन नहीं होते, बल्कि पूरी की पूरी प्रकृति ही होती है। प्रकृति ही उसका सब कुछ होता है। आदिवासियों की आस्था का केन्द्र जड़ रूप नहीं होता। उनके मिथकों लोककथाओं, को गढने वाले सृजक भी अनाम होते हैं। मिथको को लिखने की परम्परा नहीं होती अपितु उन्हें कहते है। यह स्वाभाविक है कि कथा कहने वाला कुछ न कुछ अपना भी जोड़ता है। कथा अंदाजे–बया के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। कथा का आधार वही रहता हैं।

मिथक एवं लोककथाओं में आदिवासियों ने विषयवस्तु के रूप में सृष्टि पृथ्वी, मनुष्य एवं प्रकृति के विभिन्न रूपों को आधार बनाया है। भिन्न–भिन्न आदिम समूहों की भिन्न–भिन्न भौगोलिक स्थितियों के अनुसार अलग–अलग व्याख्याएं हुई है। मिथक, कथाओं की विषयवस्तु के विषय में रमणिका गुप्ता लिखती है कि'' वे बादल, बिजली, नदी, पहाड़, बांसुरी, चाँद, सूर्य के सृजन की कथा कहते हैं, तो प्रेम के अनंत रूपों की अनंत कथाएं भी सिरजते, सुनते और जीते हैं। ये कथाएं मनुष्यों से लेकर चौपायों, दोपायों और पक्षियों तक के प्रेम से पगी होती है।'' [4]

आदिवासी इतिहास को गहराई से समझने के लिए आदिवासी मिथक कथाओं को कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे। भारतीय पौराणिक ग्रन्थों में आदिवासी पात्रों को विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जबकि सच्चाई इससे इतर है। भारतीय पौराणिक ग्रन्थ एक वर्ग विशेष के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए ही लिखे गये हैं। भारतीय पुराण ई0पू0 की दूसरी सदी से ई0पू0 की सातवी सदी के मध्य लिखे गये थे। जिनका उद्देश्य भगवान बुद्ध एवं महावीर द्वारा आरम्भ किये गये ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन को ध्वस्त करके पुरोहित वर्चस्व को स्थापित करना था। सभी पुराणों में मिथकों को अतिशयोक्ति के माध्यम से ब्राह्मणवादी व्यवस्था को ही महिमा मंडित किया गया है।

मिथक परम्परा पुराणों के बाद रामायण एवं महाभारत में मिलती है। रामायण के प्रमुख पात्र राम है, जिन्हें सम्पूर्ण समाज में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में स्थापित किया गया है। राम वनवास के चौदह वर्षो को निकालने के बाद उनका व्यक्तित्व क्या बचता है? राम वनवास के चौदह वर्ष आदिवासियों के ही बीच रहे, इन्हीं आदिवासियों की सहायता से अनार्यों (आदिवासी सन्दर्भ) विजयी हुए। इन सबके बाद राम के राजतिलक व उनकी व्यवस्था में आदिवासी पात्रों की भागीदारी, दर्जा एवं हस्तक्षेप क्या रहा? भद्र समाज के लोगो के लिए यह प्रश्न बहुत ही असुविधा जनक होगा। आदिवासी पात्र शम्बूक के बध के बाद भी राम महान रहेंगे। उपर्युक्त मिथक की व्याख्या करते हुए आदिवासी चिन्तक हरिराम मीणा लिखते हैं कि ''राम–रावण युद्ध में दोनों ही तरफ से मरने वाले आदिवासी अनार्य और युद्ध किसके लिए? इतना ही नहीं, आपके लिए जो मानव समुदाय शत्रुपक्ष था, उसे मनुष्य न मानकर राक्षस, असुर, दैत्य, दानव न जाने किस–किस तरह विरुपित किया गया और जिन्होंने आपका साथ दिया, उन्हें गिद्ध, रीछ, वानर आदि की संज्ञा देकर जंगली जानवरों की श्रेणी मे रख दिया, ताकि भविष्य में कभी उनकी पहचान न हो सके।''[5]

महाभारत मिथकों से भरा है। प्रसिद्ध मिथक एकलव्य के विषय मे है जिसके तहत एकलव्य को गुरुद्रोण धनुर्विधा सिखाने से मना कर देते हैं। निषादराज के पुत्र ने फिर भी गुरुद्रोण को गुरु मनवा दिया, अपने बल पर धर्नुधर बन जाने पर छल से दक्षिणा के तौर पर उसका अंगूठा काटकर दिलवा दिया। इस मिथक मे भी वास्तविक घटना को छुपाया गया। हरिराम मीणा इस घटना के विषय मे तर्क देकर कहते है कि '' तर्कसम्मत यह लगता है कि एकलव्य का अंगूठा जबरन काटा गया होगा। इस जघन्य अपराध को ढकने के लिए तथाकथित दक्षिणा का स्वांग रचकर थोप दिया गया। ध्यान देने की बात है कि महाभारत युद्ध में अधिकांश आदिवासी कौरवों के द्रोणाचार्य ने मांगा या करवाया होता तो वह कदापि उसकी सेना के पक्ष में न लड़ता। अंगूठा काटने वाला पांडव था, इसलिए वह पांडवो के विरूद्ध लड़ा।''[6]

आदिवासी स्त्री हिडिम्बा के पुत्र घटोत्कच का मिथक प्रसिद्ध है, जो अर्जुन को बचाने के लिए अपने को शहीद कर देता है। घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक का प्रसिद्ध प्रसंग महाभारत में है। वह किशोर एवं साहसी था। दुर्योधन उसे अपनी ओर मिलाकर युद्ध लड़ाना चाहता था। वह जैसे ही युद्ध के मैदान में आता है तो कृष्ण पाण्डवों को बचाने के लिए भोले किशोर बर्बरीक को छलने के लिए चल देते हैं। हरिराम मीणा छल करने के विषय मे लिखते हैं–''कलियुग में तेरी पूजा का इंतजाम किये देता हूँ। इस वक्त बैकुंठ धाम में भेजने की गारन्टी भी लेता हूँ। बस एक काम कर दें, लड़ मत और अपना शीश मुझे सौंप दे।''[7]

बर्बरीक के शीश को माउन्ट आबू पर रख दिया जाता है जिसे खाटू श्याम का नाम दे दिया गया। मूर्ति बर्बरीक की, लेकिन पूजा श्री कृष्ण की विडम्बना देखिए कि शीश काटकर शहीद होने वाले आदिवासी बर्बरीक की जगह सिर काटने वाले श्रीकृष्ण की पूजा की जा रही है।

महाभारत का ही एक और महत्वपूर्ण प्रसंग है जिसमे अर्जुन अश्वमेधी यज्ञ के लिए

घोड़े के साथ जाते है। यात्रा के दौरान आदिवासी बब्रूवाहन घोड़े को पकड़ लेता है। इस दौरान उसका अर्जुन से भयंकर युद्ध होता है। युद्ध मे बब्रूवाहन अर्जुन को अचेत कर देता है, क्योंकि वह मणिपुर के राजा चित्रवाहन की राजकुमारी चित्रांगदा का पुत्र था। प्रचलित मिथक देखिए कि ''अर्जुन ने चित्रांगदा और नाग कन्या उलूपी दोनों से विवाह किया था, युद्ध में बेहोश अर्जुन को उलूची जड़ी–बूटियों से जीवित करती है। प्रश्न यह है कि अर्जुन को धूल चटा देने वाला शूरवीर बब्रूवाहन महान नहीं माना जाकर अतुलनीय योद्धा अर्जुन को ही बताया गया है। [8]

महाभारत का ही एक प्रसंग कृष्ण बध से सम्बन्धित है। शबर नामक आदिवासी द्वारा कृष्ण बध किया जाता है। बध की प्रक्रिया को विकृत करके प्रस्तुत किया गया। यह सम्भव नहीं है कि हरिण की आंख समझकर पगतल में निशाना साधा जाय। आदिवासी शबर को त्रेतायुग के बलि के रूप में प्रस्तुत करके आदिवासी पात्रों को हाशिए पर करने का प्रयास किया गया है। उपर्युक्त मिथको के विषय में हरिराम मीणा लिखते है कि'' सारे सन्दर्भ देखने पड़ेगे। खाण्डव वनदहन में आदिवासी नाग जाति को भस्म करने में कृष्ण एवं अर्जुन द्वारा अग्नि का सहयोग करने से कंस, शिशुपाल, जयद्रथ बध, एकलव्य का 'अंगूठा' घटोत्कच, बर्बरीक, बब्रूवाहन प्रसंग तक। यही नहीं, जाना होगा सतयुग और त्रेता युग तक भी। ''[9]

आदिवासी मिथकों की परम्परा सतयुग में भी दिखाई देती है। प्रायः सभी मिथकों में आदिवासियों को या तो विकृत किया गया है या उन्हें हाशिए पर ढकेलने की साजिश की गयी है। सतयुग में इंद्र का मिथक प्रचलित है जिसमें इंद्र ने छल–छदूम, अय्यास, त्यभिचार, और बलात्कार (अहल्या प्रसंग) तक न जाने क्या–क्या कुकर्म नहीं किए, इसके बाद भी उसे देवताओं एवं मनुष्यों में श्रेष्ठ बताकर उसकी पूजा की जाती है। इतने कुकर्म करके भी इंद्र श्रेष्ठ कैसे हो सकता है? दूसरा प्रसंग नारद का आता है। नारद भी आदिवासी पात्र था। वह इन्द्र की व्यवस्था एवं उसके कुकर्मो को जानकर हर जगह व्यंग्य करता है। नारद के व्यंग्य की मूल भावना और उद्देश्य को समझने से मिथक की प्रासंगिकता स्पष्ट हो जाती है।

आदिवासियों को आर्यो ने हर स्तर पर विकृत करने का प्रयास किया। उन्हें उनकी पुश्तैनी जमीन से ही खदेड़ दिया। आर्यों द्वारा आदिवासियों के विकृतीकरण के विषय में हरिराम मीणा लिखते हैं कि–प्राचीन काल में अपनी पुश्तैनी धरती पर शान्ति से जीवन जी रहे आदिम समुदायों पर आपने बाहर से आकर हमले किए उन्हें मारा, दास बनाया, भगाया और फिर असुर, राक्षस, जंगली जानवरों की संज्ञा दी। फिर तुम श्रेष्ठ कैसे हुए ?''[10]

आदिवासी इतिहास लेखन से पहले (मिथकों में आदिवासी) के सारे सन्दर्भो को पुनर्व्याख्यापित करना होगा। आस्था अपनी जगह होनी चाहिए लेकिन अतीत का सही निरूपण तथ्यात्मक, तार्किक, बौद्धिक व वैज्ञानिक ही होना चाहिए। मिथकों के बाद इतिहास में आदिवासियों की भागीदारी की बात की जाय, तो यहाँ भी उन्हें हाशिए पर ही डाल दिया गया है।

भारत के प्राचीन इतिहास को देखने पर स्पष्ट होता है कि हजारों वर्षों तक राजा–महाराजाओं को ही महिमा मंडित किया जाता रहा। प्राचीन युग से मुगलों के काल तक चारण–भाट एवं दरबारी इतिहासकारों की ही परम्परा का चलन चलता रहा। इस परम्परा के तहत रियासती सामन्तों मुस्लिम बादशाहों, गणराज्यों के शासकों, एवं प्राचीन सम्राटों का ही इतिहास लिखा व लिखवाया गया। अंग्रेजों के शासनकाल में इतिहास लेखन में उल्लेखनीय कार्य किया गया। अंग्रेजो के शासन काल में आम आदमी को इतिहास में स्थान मिलना सम्भव नहीं

था। आजादी के बाद इस क्षेत्र में निस्सन्देह कार्य वामपंथी विचारकों ने किया वामपंथियों का हाशिए के समाज के लिए किए गये कार्यो के विषय में हरिराम मीणा लिखते हैं कि ''किसानों व श्रमिकों के आन्दोलनों, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों, वर्ग संघर्ष की परम्परा आदि को उजागर करने का प्रयास किया गया, लेकिन वामपंथी देश की परम्पराओं का समाधान वैश्विक स्तर पर तलाशते रहे। उन्होंने जाति व्यवस्था को नजर अन्दाज किया। आजादी के बाद डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने वामपंथियों से साथ आने का आग्रह किया था जिस पर ई0एम0एस0 नम्बूदिरीपाद ने कहा था, कि ''दलितों के पचड़े में अभी नहीं पड़ना है। साम्राज्यवाद पर विजय प्राप्त करने के बाद दलितों की समस्या अपने आप हल हो जायेगी। ''[11]

आधुनिक युग में भी इतिहास लेखन का कार्य सत्ता पोषित लोग ही कर रहे है और वे ब्राह्मणवादी वर्चस्व को पुनः स्थापित करने का प्रयास कर रहे है। इतिहासकारों की ऐसी मानसिकता के चलते इतिहास मे आदिवासी एवं अन्य वंचित लोग कहाँ मिलेंगे। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन भी आदिवासियों को कोई महत्व नहीं देता, जबकि अंग्रेजो से युद्ध करते हुए हजारों आदिवासी शहीद हो गये। उन्हें लड़ाकू कौम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कई आदिवासी समूहों को जन्म से ही अपराधी घोषित कर दिया गया है।

आदिवासियों से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण घटना है मानगढ़ कांड जिसमें जलियावाला बाग से चार गुना आदिवासी शहीद हुए थे। इसके बाद भी सत्ता पोषक इतिहासकारों ने इतिहास में इस घटना का जिक्र तक नहीं किया। यह घटना है राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में गुजरात सीमा पर स्थित मानगढ पहाड़ की। अंग्रेजों एवं रियासती सामन्तों के मिले जुले शोषण से परेशान आदिवासी 17 नवम्बर सन् 1913 ई0 के दिन वहाँ एकत्र हुए। आदिवासी बंजारा जाति के गोविन्द गुरू की अगुवाई में उपनिवेशवाद सामन्तवादी व्यवस्था के विरूद्ध यह आदिवासियों द्वारा देश की आजादी की लड़ाई की महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना के विषय में हरिराम मीणा लिखते हैं कि बेगार प्रथा, वन सम्पदा के उपयोग पर पाबन्दी एवं भारी लगान के विरोध में यह सभा आयोजित की गयी थी। ब्रिटिश कमांडेंट जे0पी0 स्टोवले के नेतृत्व में जाट रेजीमेन्ट, राजपूत रेजीमेन्ट और मेवाड़ भील कोर की चार फौजी कम्पनियों के हथियार बन्द लवाजमों ने उन आदिवासियों पर अचानक हमला बोल दिया। बन्दूक, मशीनगनों की गोलियों से उन्हें भून डाला। डेढ़ हजार आदिवासी शहीद हुए। ''[12]

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में उपर्युक्त घटना का कहीं जिक्र नहीं किया गया है। वर्तमान में सच्चाई सामने आने पर देश के सत्ताधारियों ने भी इसे स्वीकार कर लिया है। बहुत आश्चर्य की बात है कि एक सदी तक यह घटना इतिहास का हिस्सा नहीं बन पायी। आदिवासी क्षेत्रों में इस तरह की एक नहीं सैकड़ों घटनाएं है जिन्हें इतिहास में छिपाने का कार्य किया। दूसरी घटना महाराणा प्रताप से जुड़ी है। महाराणा प्रताप के सेनापति राणा पूंजा थे। वे भील थे। यह सर्वविदित है कि राणा पूंजा आदिवासी थे उन्हें राजपूत सिंद्ध करने का कुचक्र रचा गया। विरोध हुआ तो इतिहासकारों ने इसे स्वीकार किया।

आदिवासियों की इतिहास में भागीदारी से सम्बन्धित एक गम्भीर बात है, आदिवासियों का अपराधी के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना। अपराधी घोषित करने का षडयंत्र अंग्रेजो और देशी सामन्तों का था। इन शासकों ने आदिवासियों की सत्ता एवं संसाधनविहीन करने के बाद उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया। जबकि ऐतिहासिक प्रमाण कहीं भी यह सिद्ध नहीं करते कि आदिवासी अपराधी रहे हैं। वर्तमान में भी गैर आदिवासी तबका आदिवासियों के प्रति अपराधिक

मानसिकता रखता है। सरकारी पुस्तकों ने भी उनके साथ न्याय नहीं किया। राजस्थान की प्रतियोगी परीक्षाओं में मीणाओं, भीलों का परिचय इस प्रकार दिया गया है। '' इनका मुख्य धन्धा चोरी, लूट, डकैती रहा है। कंजर, साँसी, बावरिया, कालबेलिया, पराधी, बेडिया जैसे आदिम समूहों को पुलिस चैन से नहीं बैठने देती। ''[13]

सत्ता पोषित इतिहासकारों का आदिवासियों के प्रति जो रवैया रहा है उपर्युक्त उदाहरणों में स्पष्ट हो गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता यह है कि जागरूक एवं बुद्धिजीवी आदिवासी लोग आदिवासी समाज के प्रति संवेदनशील गैर आदिवासी प्रबुद्धजन जिम्मेदारी के साथ इतिहास लेखन पर विचार करें। तथाकथित इतिहासकारों की भूलों को संशोधित करे जो इतिहास में छूट गया है उसे पुनः जोड़े। इसके लिए आदिवासियों से सम्बन्धित मिथकों की पुनः व्याख्या की जाये। इसके अलावा आदिवासियों से सम्बन्धित शिला लेख, ताम्रपत्र एवं अन्य लिपिवद्ध प्रमाणों को एकत्र कर उनसे प्रमाणित जानकारी इतिहास में शामिल की जाय। आदिवासी जीवन शैली से सम्बन्धित लोकगीत, लोककथाओं आदि में आये सन्दर्भो को भी शामिल किया जाय। आदिवासियों की सांस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन किया जाय। आदिवासी दर्शन के सभी आयामों यथा पंचायती परम्परा, स्वशासन पद्धति, सामाजिक, आर्थिक जीवन की जानकारी को इतिहास में शामिल करना होगा।

आदिवासी सांस्कृतिक परम्परा में उत्सव, मेले, खेल प्रतियोगिता, शौर्य गाथाओं, पहेलियों से ऐतिहासिक सामग्री को एकत्र किया जाय। आदिवासी जीवन में अन्धविश्वास एवं कुरीतियां बहुत है। इनके पीछे के वास्तविक कारणों को जानने से भी इतिहास समृद्ध हो सकता है।

आदिवासी समूहों की भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक शैली के बावजूद भी कुछ ऐसे तत्व है जो सभी आदिम समूहों में समान होते है। सामूहिक एकता के इन तत्त्वों के विषय में हरिराम मीणा लिखते हैं कि'' देश के अंचल–अंचल में आदिवासी बिखरे हुए है लेकिन धर्म, संस्कृति, सामाजिक, व्यवस्था, आर्थिक जीवन, स्वभाव, बाहरी दबाव, शोषण व गतिरोध और अस्मिता के लिए निरन्तर सेघर्ष आदि ऐसे तत्व है, जो हर आदिवासी समूह को आपस में एक सूत्र में बांधे हुए हैं। [14]

आदिवासियों की उपर्युक्त सामूहिक भावना ऐतिहासिक सामग्री जुटाने में लाभकारी हो सकती है। प्रकृति प्रेम और मानव स्वभाव सभी आदिम समूहों में समान होता है। शिष्टाचार के सम्बोधन में भी समानता होती है। इसके अलावा आदिवासी चाहे किसी भी अंचल के हो सबका अतीत एक जैसा ही रहा है। जब अतीत एक जैसा रहा है तो इतिहास भी एक समान होना चाहिए। ऐतिहासिक सामग्री व्यापक स्तर पर एकत्र करने के बाद आंचलिक स्तर पर एकत्र कर इतिहास को प्रमाणिक बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. त्रिपाठी, डॉ0 हरिराम, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जनजातियों की सांस्कृतिक परम्पराएं लेख से, आदिवासी विमर्शः स्वस्थ जनतात्रिंक मूल्यों की तलाश (सं0)डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, डॉ0 रावेन्द्र कुमार साहू, फैसिफिक प्रकाशन ,नई दिल्ली। संस्करण–2011, पृष्ठ 269
2. गुप्ता, रमणिका, आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना, (सं0) सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ–33
3. गुप्ता, रमणिका, (सं0) आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ–35
4. गुप्ता, रमणिका, (सं0) आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ–35

5. मीणा, हरिराम भारतीय मिथक, इतिहास और आदिवासी लेख से रमणिका गुप्ता, (सं0) आदिवासी कौन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2016, पृष्ठ–140
6. मीणा, हरिराम भारतीय मिथक, इतिहास और आदिवासी लेख से रमणिका गुप्ता, (सं0) आदिवासी कौन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2016, पृष्ठ–140
7. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016 ,पृष्ठ–25
8. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016 ,पृष्ठ–26
9. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016, पृष्ठ–26
10. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016 पृष्ठ–27
11. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016 पृष्ठ–143
12. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत,संस्करण–2013, आवृति–2016 पृष्ठ–143
13. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत,संस्करण–2013, आवृति–2016 पृष्ठ–145
14. मीणा, हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण–2013, आवृति–2016 पृष्ठ–147

Copyright © 2018, Nanku Prasad Yadav & Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.